सूर्य वंष में राज-पद

जो व्यक्ति सूर्य की तरह अपनी दिव्यता को प्रकाषित करे उसका ही जन्म लेना सार्थक है। सूर्य अपने अस्तित्व से संसार को निरंतर प्रकाषमान करता है। इसलिये उसका उदय होना धन्य मान कर उसकी पूजा वन्दना भी की जाती है। प्रकाष पुंज सूर्य की तरह सदा अपना जीवन आभामय बनाये रखेंगे तब अनायास ही हमसे संसार को सकाष-प्रकाष मिलता रहेगा। जन्म उसी का धन्य माना जाता है जो स्वयं के जीवन से सहज ही दिव्यता का प्रसारण करते हुये सभी को सुख स्वरूप बनावे। हमसे सदैव दिव्य रष्मियों का निर्झर झरना बहते रहना चाहिये। इसके लिये अपनें विचारों को दिव्य बनाने से ही हम दिव्यता के स्रोत बन सकेंगे। जिसके चिन्तन में दिव्यता आ जाती उनकी दृश्टि-वृत्ति-कृति-स्मृति-वचन-स्वांस-संकल्प-भावनायें आदि सब कुछ में दिव्यता आ जाती है। मन-बुद्धि के दिव्यीकरण से जीवन का भी दिव्यीकरण हो जाता है।

अपने जीवन को दिव्यता से भरपूर करने के ही साथ-२ अपनी संततियों को भी वैसा ही बनाइये स्वयं के पुत्र-पुत्रियों का दिव्यीकरण विष्व की सर्वोत्तम सेवा है। इससे ही हमारे गृहस्थ जीवन की सार्थकता व सुधन्यता है। हमारा और हमारी सन्तानों का जीवन ही नहीं सभी प्राणियों का इसी तरह से सुन्दर विकास हो सकेगा। कहा भी है-

उनका जीवन धन्य है जो जीते हैं सबके लिये, धिक्कार है उनको सुनो जो जीते हैं अपने लिये।
होता है जन्म सुजन का विश्व के उद्धार हित, विश्व सेवा विश्वहित, विश्व के कल्याण लिये।।

हमारे जीवन और जन्म की षोभा इसी में है कि हमारे व हमारी सन्तानों में विष्व हितकारी भावनायें हों। मानवीय मूल्यों का संसार में प्रचार हो। अपने जीवन को सुजीवन बनाने के लिये जन्म लीजिये और जन्म दीजिये। परिवार-समाज-राश्ट्र व संसार के जीवन को श्रेश्ठ बनाने के लिये जन-जन के जीवन में दिव्यता का संचार करिये। सदाचरी अमृतमय, निर्विकार-निश्पाप-निर्दोश जीवन, देवी-देवता पद पाने वाली आत्मायें ही बना पाती हैं। जो लोग ऐसी विभूतियों के जीवन का अनुसरण करते वे ही अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। ऐसे देव मानवों की संगति से स्वयं के जीवन को भी समुज्जवल बनाइये। अपने जीवन को दिव्य आत्माओं के जीवन यज्ञ से सम्पृक्त रखिये। हमारा भी जीवन, यज्ञ-हवन बन जाये। यज्ञ में लकड़ी-घी-अनाज-तिल आदि जलाते हैं तो हमारे सानिध्य से भी सभी की विकार-बुराइयाँ मिट जानी चाहिये। तभी आप देवी-देवता समान बन पायेंगे। आग में जिस तरह लकड़ी-घी-अनाज आदि जल जाते उसी तरह परमात्मा की याद से काम-क्रोध-लोभ आदि विकार भी जलकर समाप्त हो जाते हैं।

जीवन यज्ञ समान बन जाने पर आत्मा की आवाज स्पश्ट रीति से सुनी जा सकती है। वह नितान्त सत्य और सर्वथा अदम्य होती है। ऐसी आत्माओं के संकल्प सत्य संकल्प होते हैं। विचार सत्य विचार तथा वचन सत्य वचन होती है। उनके कर्म सत् कर्म बन जाते हैं। सतत योगाभ्यास से जिसने आत्म जागृति प्राप्त कर ली अर्थात् आत्मा के आवाज को सुनने की क्षमता प्राप्त कर ली विष्व संघर्श में रत रहते हुये भी वह परमात्मा समान है। ऐसी सौभाग्यषाली आत्मा का सभी के द्वारा अनुसरण किया जाना चाहिये। आत्म जागृति ही सतोप्रधान चेतना की जननी है। आत्म जागृत आत्माओं का चित्त सदा चैतन्य (जीवित) रहता है। इसी कारण वे अपने मस्तिश्क का षत प्रतिषत उपयोग कर सकते हैं। अन्यथा कलयुगी आत्मायें तो चार-छः प्रतिषत ही अपनी चेतना का उपयोग कर पा रही हैं। बाकी चेतना उनकी सुसुप्ति और अलबेलेपन से ढकी रहती है। अब यह परम आवष्यक हो गया है कि आत्म साधना द्वारा जन-जन के अन्तःकरण को इतना षान्त और जागृत किया जाये कि सभी स्वयं की आत्मा का आवाज सुनते हुय सहज अनुसरण कर सकें। इसके लिये उन्हें कठोर प्रयत्न न करना पड़े। इसी से मानवता

सत्य पथ का अनुगमन करेगी। आत्मा की आवाज न सुन पाने के कारण ही आज लोग दानवीयता का अनुसरण कर रहे हैं, फलस्वरूप दुनिया भी दानवी बन गयी है।

हे पथिक ! तेरे जीवन की संध्या बिलकुल निकट आ गयी है। अभी यात्रा तो बहुत लम्बी तय करनी है। जीवन लगने आ गया पर तू न इस जन्म की साध पूरी कर पाया न आने वाले जन्मों के लिये

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com